REVIEWS OF LITERATURE
ISSN: 2347-2723
IMPACT FACTOR : 3.3754(UIF)
VOLUME - 5 | ISSUE - 8 | MARCH - 2018

# सोशल मीडिया का विवाह पर प्रभाव

डॉ. ज़किया रफत
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष , समाजशास्त्र विभाग
आर.बी.डी. स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, बिजनौर.

**सारांश–**

भारत में सोशल मीडिया की लोकप्रियता में निरन्तर वृद्धि हुई। हमारे देश की दो तिहाई आबादी आज अपना समय विभिन्न ऑन लाइन सामाजिक नेटवर्किंग साइट्स जैसे फेसबुक, ट्वीटर, यू–ट्यूब, व्हाट्स एप पर व्यतीत कर रही है। इसमें किशोरों से बुजुर्गों तक हर उम्र के लोग शामिल हैं। इसके बढ़ते क्रेज़ से विवाह तथा परिवार जैसी महत्वपूर्ण संस्थाओं पर परिवर्तन दिखायी पड़ रहे हैं। युवक–युवतियां फेसबुक से जीवन साथी ढूँढ रहे है और विवाह के निमन्त्रण पत्र भेजने में सोशल मीडिया का प्रयोग हो रहा है। प्रस्तुत शोधपत्र में वर्तमान समय में विवाह संस्था पर सोशल मीडिया के प्रभावों को जानना है।

**प्रस्तावना–**

वर्तमान में सोशल मीडिया की लोकप्रियता में निरन्तर वृद्धि हुई है। फैसबुक व व्हाट्स एप से जुड़ना स्टेट्स सिम्बल माना जाता है।[1] भारत की लगभग दो तिहाई आबादी आज अपना समय विभिन्न ऑन लाइन सामाजिक नेटवर्किंग साइट्स जैसे फेसबुक, ट्विटर, यू–ट्यूब, व्हाट्एप पर व्यतीत कर रही है। कुछ समय पहले तक जो लोग ई–मेल का उपयोग करते थे वह भी इन सोशल साइट्स के कारण कम होता जा रहा है। आज लाईव चैट, अपडेट्स व वीडियो शेयरिंग लोकप्रिय होते जा रहे है।[2]

सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने वालों में किशोरों से बुजुर्गों तक हर उम्र के लोग शामिल हैं। खासकर रिलायंस जियो के लांच होने और देश के दूर दराज के इलाकों में भी 4जी तकनीक पहुंचने के बाद सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने वालों की तादाद में तेजी से इजाफा हुआ है। देश की खासकर शहरी आबादी में तो सोशल मीडिया अब समाज और संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा बनता जा रहा है।[3]

वर्तमान परिदृश्य यह है कि सोशल मीडिया के प्रति दीवानगी एडिक्शन का रूप ले चुकी है।[4] इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया द्वारा जारी आंकड़ों की माने तो भारत के शहरी इलाकों में प्रत्येक चार में से तीन व्यक्ति सोशल मीडिया का किसी न किसी रूप में प्रयोग करता है। इसी रिपोर्ट में 35 प्रमुख शहरों के आंकड़ों के आधार पर यह भी बताया गया है कि 77 प्रतिशत उपयोगकर्ता सोशल मीडिया का इस्तेमाल मोबाइल से करते है। सोशल मीडिया तक पहुंच कायम करने में मोबाइल का बहुत बड़ा योगदान है और इसमें भी युवाओं की भूमिका प्रमुख है।[5]

फेसबुक के अनुसार, भारत में फिलहाल 20.1 करोड़ लोग ऐसे हैं जो हर महीने कम से कम एक बार फेसबुक पर लॉगिन करते हैं। महानगरों के अलावा छोटे शहरों में भी इसके बिना रोजमर्रा के जीवन की कल्पना

करना कठिन है। लेकिन अब सोशल मीडिया ने जिंदगी काफी आसान कर दी है। इसके साथ ही सूचनाओं का बहाव भी काफी तेज हो गया है।[6]

व्यक्तियों के जीवन में सोशल नेटवर्किंग साइट्स से क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है। इसने उनकी जीवन शैली, रूचियां, आदतें सभी कुछ बदल कर रख दिया है। यह सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सभी गतिविधियों को प्रभावित कर रहा है।[7]

इसके प्रति बढ़ते क्रेज से विवाह तथा परिवार जैसी महत्वपूर्ण संस्थाओं में भी परिवर्तन दिखायी पड़ रहे है। परम्परागत पारिवारिक व सामाजिक सम्बन्ध बदल रहे है। समाजशास्त्रियों का मानना है कि देश में बढ़ते एकल परिवारों के मौजूदा दौर में सोशल मीडिया सम्बन्धों को मजबूत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।[8] सोशल मीडिया ने कई मायनों में जीवन आसान बना दिया है। अब युवक युवतियां इसी के माध्यम से जीवन साथी ढूंढ रहे है। विवाह सम्बन्ध तय करने, विवाह की प्लानिंग करने, निमंत्रण पत्र भेजने तथा वस्त्रों व गहनों की खरीदारी करते समय वर अथवा वधू की पसन्द–नापसन्द जानने के लिए भी सामाजिक मीडिया का प्रयोग किया जा रहा है। इतना ही नहीं दूर बैठे रिश्तेदार भी अपने घर में बैठे–बैठे ही वीडियो कान्फ्रेसिंग से रिश्तेदारी में होने वाले विवाहों का आनन्द उठा रहे है। परन्तु किसी भी चीज की लत अच्छी नहीं है। सोशल मीडिया के दौर में निजी डाटा की कोई गोपनीयता नहीं रहने की वजह से विवाह संस्था खतरे में पड़ रही है। अध्ययन दर्शाते हैं कि फेसबुक के कारण विवाह विच्छेद में वृद्धि हो रही है। सोशल मीडिया की व्यस्तता के कारण जीवन साथी के लिए परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों और सम्मान में निरन्तर कमी आ ही है। सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के हमारी संस्कृति तो बदली ही है। परिवार व विवाह के अर्थ भी बदल गए हैं। लोग बिना सोचे समझे कोई भी मैसेज फारवर्ड कर देते हैं जिसके परिणाम घातक हो सकते है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया विवाह संस्था को किस प्रकार से प्रभावित कर रहा हैयह जानना अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत शोध इसी दिशा में एक लघु प्रयास है।

## प्रमुख अध्ययन–

वर्तमान समय में सामाजिक मीडिया की बढ़ती लोकप्रियता ने समाजशास्त्रियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है। इस विषय पर अनेक शोध उपलब्ध है जिनमें से कुछ निम्नवत् है।

जेनकींस (2006)[9] ने निष्कर्षित किया है कि सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से सीखने की सहभागी संस्कृति विकसित हो रही है।

लैनहार्ट (2010)[10] ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यस्क किशोरों में विशेष रूप से लड़कियां इन साइट्स को अधिक पसन्द करती है। लड़कियों के लिए यह पहले से चली आ रही मित्रता को बनाये रखने का का महत्वपूर्ण स्थान है। वहीं लड़कों के लिए यह फ्लर्ट करने तथा नए मित्र बनाने का अवसर प्रदान करता है।

रिट[11] ने निष्कर्ष निकाला है कि आगामी दस वर्षों में आनलाईन डेटिंग वैवाहिक सम्बन्धों की शुरूआत करने वाला प्रमुख स्थान होगा।

चौधरी तथा साहा (2015)[12] ने भारत में युवाओं पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि युवाओं में फेसबुक बहुत अधिक लोकप्रिय है।

जकिया रफत (2016)[13] ने निष्कर्षित किया है कि छात्राओं में सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रयोग से छात्राओं पर सकारात्मक प्रभाव अधिक पड़े है। उनके ज्ञान में तथा आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। सम्बन्धों का विस्तार हुआ है। बहुत थोडी सी छात्राओं ने इसे समय की बर्बादी माना है।

## उददेश्य–

प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य विवाह संस्था पर सामाजिक मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना है।

## अध्ययन क्षेत्र–

प्रस्तुत अध्ययन पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थित बिजनौर नगर में सम्पन्न किया गया है।

## अध्ययन विधि–

प्रस्तुत अध्ययन व्यैक्तिक अध्ययन पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु 3 इकाईयों का चयन सविचार निदर्शन पद्धति के प्रयोग द्वारा किया गया है। इकाईयों से सूचनाएं साक्षात्कार प्रविधि द्वारा एकत्रित की गयी है।

## निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में चयनित इकाईयां के विवाह पर सामाजिक मीडिया के प्रयोग की निम्न स्थिति पायी गयी।

### केस नं0–1–

हिन्दू पंजाबी मध्यम वर्गीय उच्च शिक्षित परिवार की 25 वर्षीया एक युवती (जो एक इंजीनियरिंग कालेज में लेक्चरर है) की फेसबुक पर एक युवक से मित्रता हो गयी। धीरे–धीरे घनिष्टता बढ़ गयी और वे सप्ताहांत डेट पर जाने लगे। उन्होंने परस्पर विवाह करने का वादा भी किया। इधर युवती के माता–पिता उसके लिए रिश्ते ढूंढने लगे। जब भी किसी युवक की बात उससे करते, युवती विवाह के लिए मना कर देती थी। जब 3–4 बार ऐसा हुआ तब माता–पिता ने सोचा कि हो सकता है कि बेटी को कोई युवक पसन्द हो। वह उन्हें बताने में संकोच कर रही है। एक दिन माँ ने जब उससे अकेले में पूछा तब पता चला कि कोई युवक उसे पसन्द है और उस युवक से उसकी दोस्ती फेसबुक के माध्यम से हुई थी। माँ ने पिता से इस सम्बन्ध में बात की। वे राजी हो गये। उन्होंने बेटी से कहा कि हमें फोन मिलाओ। युवती ने युवक को फोन किया और माता–पिता से मिलवाने की इच्छा प्रकट की। युवक ने हाँ कर दी और एक स्थानीय सिनेमा हाल पर मिलने का समय दिया। यह युवती अपने माता–पिता के साथ सिनेमा हाल पर नियत समय पर पहुंची। वहां वह युवक नहीं था। माता–पिता ने सोचा कि थोड़ी बहुत देर में आ जायेगा। एक घंटा बीत जाने पर माता–पिता ने युवती से युवक को फोन करने के लिए कहा। जब युवती ने फोन किया तो स्विच आफ आता रहा। माता–पिता समझ गए कि फ्रॉड है। लेकिन युवती नहीं मानी और वे 4–5 घंटे वही बैठे प्रतीक्षा करते रहे। युवती बार–बार फोन ट्राई करती रही। 5 घंटे बाद फोन उठा तो उसने बहाना बनाया और एक पता यह कह कर बताया, कि यह उसके घर का पता है और वहां आने पर उसके माता–पिता से भी मुलाकात हो जाएगी। यह युवती अपने माता–पिता के साथ उक्त पते पर पहुंची। लोगों से पूछताछ की उस युवक का नाम बताया। सबने मना कर दिया कि वे उस युवक को नहीं जानते और यह मकान नम्बर गलत है। उस कालोनी में उस प्रकार के मकान नम्बर नहीं थे। इसके माता पिता का गुस्से से बुरा हाल था। वह समझ चुके थे कि बेटी ठगी गयी है। धोखा हुआ है। अगले दिन उन्होंने वकीलों से पूछताछ की तब वकीलों ने भी मना कर दिया कि जब कोई सही नाम, पता आपको ज्ञात ही नहीं तो एफ. आई.आर. कैसे दर्ज करायी जा सकती है।

### केस नं0–2–

एक 24 वर्षीया मुस्लिम लड़की जो एक डिग्री कालेज में पार्ट टाइम शिक्षिका थी। उसके माता–पिता दोनों इण्टर कालेज में लैक्चरर थे। उस लड़की की फेसबुक पर एक इण्टर कालेज के प्रवक्ता से मित्रता हो गयी। फोटो के आदान–प्रदान हुए। उसके बाद एक दूसरे के मोबाइल नम्बर ले लिए और फिर वीडियो चैट्स होने लगी। जल्दी ही बात विवाह तक पहुंच गयी। दोनों के माता–पिता राज़ी हो गये। विवाह भी सम्पन्न हो गया। विदाई के बाद जब ससुराल पहुंची और लड़के (पति) ने देखा कि यह तो काली है, मोटी है तो उसे पसन्द नहीं आयी। वह विवाह के तीन चार दिन बाद कार्य स्थल पर वापिस चला गया और इसे अपने माता–पिता के साथ छोड़ गया। जब कई महीने गुजर गये तो लड़की के माता–पिता ने पति पर अपने साथ ले जाने के लिए दबाव बनाया। वह साथ ले गया परन्तु इसे घर में ले जाकर रख दिया। अपने साथ कहीं नहीं लेकर गया। यह अकेली पड़ी रहती थी। एक दिन उसका मोबाइल उठाकर देखा तो पता चला कि उसके तो अन्य लड़कियों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसने पति से इस सम्बन्ध में बात की तो दोनों के बीच झगड़ा हुआ। यह अपने माता–पिता के पास वापिस आ गयी और घरेलू हिंसा में उसके विरूद्ध मुकदमा दर्ज करवा दिया। मुकदमा न्यायालय में चल रहा है। जब वह न्यायालय में आया तब उसने वकील को बताया कि फोटो में तो सुन्दर दिखती थी और इसने फेसबुक स्टेट्स पर लेक्चरर डिग्री कॉलेज डाला हुआ था। मुझे नहीं पता था यह पार्ट टाइम प्रवक्ता थी। मेरे साथ धोखा हुआ। वह इसे अपने साथ ले जाना नहीं चाहता। यह भी उसके साथ जाना

नहीं चाहती। घर बैठे भरण–पोषण लेना चाहती है और वकीलों के माध्यम से पति पर तलाक देने के लिए दबाव बना रही है।

### केस नं0–3–

एक उच्च शिक्षित उच्च मध्यम वर्गीय हिन्दू परिवार की 40 वर्षीया महिला जो एक्सपोर्ट करती है। उनके पति भी उच्च शिक्षित तथा बड़े व्यापारी है। उनके तीन किशोर सन्तानें भी है। पति–पत्नी दोनों के फेसबुक एकाउन्ट है। वे दोनों एक ही यूनिवर्सिटी में साथ–साथ पढ़ते थे। अतः दोनों के कुछ कॉमन फ्रेंड्स भी है। धीरे–धीरे पति फेसबुक एडिक्टिड हो गये। वे ऑफिस से वापिस आकर मोबाइल पर फेसबुक चलाते रहते हैं। पत्नी को इस पर आपत्ति हुई। क्योंकि घर के व बच्चों से सम्बन्धित कार्य Suffer करने लगे। पत्नी ने जब अधिक कहना शुरू किया तो दोनों में झगड़े होने लगे। पत्नी हर समय चिंता में रहने लगी। उन पर शंका करने लगी। दोनों में महीनों तक बात–चीत समाप्त हो जाती है। परन्तु वह फेसबुक नहीं छोड़ते। इसका परिणाम यह हुआ कि बच्चे भी धड़ल्ले से फेसबुक का प्रयोग कर रहे है। 20 वर्षीय पुत्री ने भी अपने क्लासमेट से मित्रता कर ली। वह उसके साथ घूमती है। 18 वर्षीय पुत्र अपनी गर्ल फ्रेंड के साथ घूमता है और रात को उससे वीडियो चैट करता रहता है। तीसरी 14 वर्षीय बेटी भी सारा दिन फेसबुक पर है तीनों बच्चे फेल होते रहते है। पति कहते है कि दिल्ली के इतने महंगे स्कूलों में पढ़ने भेजा, सब सुविधाएं है, पढ़ना नहीं चाहते, माँ नहीं देखती। माँ कहती है, पिता नहीं देखता। बच्चे मनमानी करते हैं वे माता–पिता की बात नहीं मानते।

अतः निष्कर्ष के तौर पर कह सकते है कि व्यक्तियों के जीवन में सोशल साइट्स का महत्व निरन्तर बढ़ा है तथा विवाह संस्था पर भी इसका प्रभाव पड़ रहा है। युवक–युवतियाँ इसके माध्यम से बने मित्रों में जीवन साथी की तलाश करते है जिसमें से अधिकांश मामलों में धोखा होता है। यदि फेसबुक मित्रों से विवाह हो भी जाता है तो बाद में टूट भी जाता है। इस सोशल साइट्स ने वैवाहिक तथा पारिवारिक विघटन में वृद्धि की है।

### संदर्भ–


1. रफत, ज़किया (2016), ''सोशल नेटवर्किंग साइट्स का छात्राओं पर प्रभाव'', रीसेंट रिसर्चेज़ इन सोशल साइंसेंस एण्ड हयूमैनिटीज़, वर्ष 3, अंक 1, अप्रैल, मई, जून 2016, 56.
2. चौधरी, दिनेश कुमार (2016) ''युवाओं पर जनसंचार के साधनों का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'', राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा, वर्ष 18, अंक 2, जुलाई–दिसम्बर, 86–87.
3. www.dw.com/hi/ सामाजिक नई.....मीडिया/a-4243062, Feb 2, 2018.
4. दिमाग पर सोशल मीडिया का असर, 15 नवम्बर, 2015, 18.
5. पांडे, केशव मोहन (2015) ''सोशल नेटवर्किंग साइट्स और युवा वर्ग'', पब्लिश्ड ऑन जुलाई 8, 2015. https://www.linkedin.com
6. www.dw.com/hi/ सामाजिक नई.....मीडिया/a
7. चौधरी, पूर्वोक्त.
8. www.dw.com/hi/ सामाजिक नई.....मीडिया/a
9. जेनकींस हेनरी (2006), ''कन्फ्रटिंग दि चैलेंजेस ऑफ पार्टिसिपेटरी कल्चर : मीडिया एजुकेशन फॉर दि ट्वन्टी फर्स्ट सेन्चुरी'', शिकागो : दि जॉन डी एण्ड कैथरीन, टी. मैक आर्थर फाउन्डेशन.
10. लेनहार्ट अमाण्डा, रिस्टन पर्सेल, आरो स्मिथ एंड कैथरीन ज़िकुर (2010) ''सोशल मीडिया एंड मोबाइल इंटरनेट यूज़ अमंग टीन्ज़ एंड यंग एडल्ट्स'', वाशिंगटन, डी.सी. : पीऊ इंटरनेट एण्ड अमेरिकन लाइफ प्रोजेक्ट एट http://pewresearch.org/pubs/1484/social-media-mobile-internet-use-teens-millennials-fewer-blog, accessed 22 december, 2011.
11. online11.jump up minoz, caroline lego, Towner, Terri (Dec 5, 2011), Back to the wall...Facebook in the college classroom....first monday 16 (12).
12. रफत, ज़किया, पूर्वोक्त।

13. चौधरी, इन्द्रजीत राय एवं विश्वजीत साहा (2015) ''इम्पैक्ट ऑफ फेसबुक एस ऐ सोशल नेटवर्किंग साइट (एस.एम.एस.) ऑन यूथ जेनेरेशंस–ए केस स्टडी ऑफ कोलकाता सिटी, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हयूमैनिटीज एंड सोशल इनवेंशन, 4 (6) 23–42